'सुखायतन' के संबंध में जब से चर्चा प्रारंभ हुई है, तबसे वॉटसएप समूह में मैंने अनेक संदेश अलग-अलग समय पर प्रेषित किये हैं, जिनमें हमारी भावनायें/नीतियाँ/आवश्यकतायें स्पष्ट की गई हैं। वॉटसएप पर ही भाई विपिनजी शास्त्री नागपुर ने हमारी टीम को सावधान किया था कि जो लिखा जा रहा है अर्थात् जिन भावनाओं के आधार पर सुखायतन की स्थापना की कल्पना की जा रही है, स्थापना के बाद उन भावनाओं को भूल न जाना। उन संदेशों को सार्वजनिक करने व स्थायित्व देने के लिये संस्कार-सुधा में प्रकाशित किया जा रहा है -

सुखायतन - एक परिकल्पना

भावना

महा भाग्य से नरतन पाया, पाए जिनवर जिनवाणी।
साधर्मी की प्रीति मिली है, जो है निज-पर कल्याणी।।
तत्त्वज्ञान लेने-देने का, मंगल अवसर आया है।
दोषरहित होवे प्रभावना, बस मन में यह भाया है।।
निर्वांछक-निष्पक्ष रहूँ में, रहे हृदय में वात्सल्य भाव।
भूल-चूक तो होती ही है, फिर भी कुछ करने का चाव।।
'ध्रुव' अरु 'शाश्वतधाम' हुए हैं, बाल-बालिकाओं हेतु।
प्रौढ़ वर्ग हित हो सुखायतन, भाव यही मैं बनूँ सेतु।।
सत्साहित्य पठन-पाठन, अरु लेखन में जीवन बीते।
आतमहित अरु हो प्रभावना, मन में यही स्वप्न जीते।।

उक्त भावना मैंने 2 वर्ष पूर्व विविधा पुस्तक में प्रकाशित की थी। तभी से कुछ आत्मीय सदस्यों ने पूछा था कि यह 'सुखायतन' क्या ? कहाँ ? कब ? कैसे ? है। तब मैंने कहा था कि अभी 'सुखायतन' के गर्भ का प्रकटीकरण नहीं है अभी मात्र भावना है। आज इस आलेख के माध्यम से गर्भ का प्रकटीकरण हो रहा है। जन्म होगा या नहीं ? जन्म लेकर बड़ा होगा या नहीं ? इत्यादि प्रश्न अभी काल के गर्भ में हैं। जो होगा वह अभी भगवान जानते हैं, भविष्य में हम जानेंगे। मैं भविष्यवक्ता नहीं हूँ अतः अभी कुछ नहीं कह सकता।

प्रस्तावना

तत्त्व प्रचार-प्रसार के लिए पाठशाला, शिक्षण-शिविर, चल शिक्षण-शिविर, एक निश्चित क्षेत्र में पत्राचार से शिक्षण कार्य का संचालन तथा सिद्धायतन, ध्रुवधाम और शाश्वतधाम की स्थापना व संचालन में अपनी मति व गति के अनुसार विगत 30 वर्षों से योगदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और निश्चित ही यह योगदान/परिश्रम मात्र पर हिताय की भावना से नहीं अपितु 'आत्महिताय' भी किया गया है ।

सुखायतन क्यों ?

विगत कई वर्षों से मुझे एक बात खटकती रही है कि अनेक स्थानों पर हमने आत्मार्थियों हेतु स्वाध्याय-चिंतन के लाभ के नाम पर आत्मार्थी भवन/सदन/कक्ष आदि का निर्माण तो किया है परंतु वहाँ

आत्मार्थियों का निवास नहीं हो पा रहा है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं पर उन कारणों में एक बड़ा कारण यह है कि वहाँ पर वास्तव में यदि कोई आत्मार्थी जाकर के रहना चाहे/अध्ययन करना चाहे/शांति से जीवन जीना चाहे तो जो व्यवस्थाओं के लिए शुल्क अदा करना पड़ता है वह सभी के बस में नहीं होता साथ ही अर्थ की प्रधानता होने से वहाँ रहने वाले सामान्य जन के प्रति समाज व संस्था द्वारा अपेक्षित व्यवहार नहीं होता (कहीं तो उपेक्षित व्यवहार होता है) अत: मैं पिछले कई वर्षों से एक ऐसे संकुल की स्थापना के बारे में सोचता रहा हूँ, जो कुछ अलग हटकर के हो।

मैं यह मानता हूँ कि अभी तक ध्रुवधाम या शाश्वतधाम की जो परिकल्पनाएँ साकार हुई हैं, जिनमें मुझे भी सहभागी होने का मंगल अवसर प्राप्त हुआ, उनमें कुछ व्यक्तियों का अति विशिष्ट योगदान था तथा उनकी विधा अलग होने से समाज का भी बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान मिला, परंतु यह जो मैं कल्पना आपके समक्ष रखना चाहता हूँ, इसकी भी विधा तो अलग ही है, पर मुझे पता भी नहीं है कि इस प्रकार से अन्य कोई सोचता है या नहीं, मुझे पता नहीं कि कोई सहयोग करेगा या नहीं, यह 'सुखायतन' आकार लेगा या नहीं परंतु मेरे मस्तिष्क में जो आकार है, वह आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ–

'सुखायतन क्या ?'

'सुखायतन' वृद्धाश्रम/अनाथाश्रम या उदासीन आश्रम नहीं है। अधिकांश स्थानों पर प्रौढ़/वृद्ध वर्ग हेतु जो भी संकुल बनते हैं, उनमें संस्था संचालकों का यही मानना रहता है कि यह वृद्ध आश्रम है, जहाँ वृद्ध लोग अपना टाइम पास करने और अंतिम समय में धर्म आराधन कर सकें इसके लिए ही यहाँ आए हैं या जो परिवार/समाज की स्वार्थवृत्ति से उदासीन हो (उदासीन कर दिया गया) गये या जो ब्रह्मचारी/विधुर/विधवा हैं वे यहाँ आकर के रहने लगे हैं।

लेकिन मेरी कल्पना में 'सुखायतन' एकमात्र उस स्थान के रूप में विकसित करने का है, जहाँ हम पारिवारिक/धार्मिक/आध्यात्मिक वातावरण में रहते हुए युवा/प्रौढ़ भी सुख-शांति से रहें और परमार्थ सुख की प्राप्ति का यथायोग्य पुरुषार्थ करें।

'सुखायतन' में रहने वालों के लिए चारों अनुयोगों के स्वाध्याय की व्यवस्था करेंगे।

साधर्मीजन परस्पर में हंसते-खेलते बहुत ही निर्भार वातावरण में तत्त्वचर्चा करते हुए ही नहीं अपने पारिवारिक अनुभवों को भी एक-दूसरे के बीच बाँटते हुए शांति का अनुभव कर सकें।

यहाँ पर रहने वाले प्रवचनकार के अतिरिक्त CD-VCD के माध्यम से आध्यात्मिक प्रवचनकारों के प्रवचनों को सुना सकें।

कैसे हम अपने इस वर्तमान जीवन में बनने वाली भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में समता धारण कर सकें, एक-दूसरे का सहयोग कर सकें, परिवार के प्रति सकारात्मक चिंतन रख सकें, ऐसे बिंदुओं पर विशेष ध्यान आकर्षण करेंगे।

'सुखायतन' का निर्माण हवा-प्रकाश आदि की व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए सस्ता-सुंदर और टिकाऊ के लक्ष्यों को लेकर ही किया जाएगा। भव्यता/सुंदरता के नाम पर अधिक व्यय हो – ऐसा हमारा लक्ष्य नहीं होगा।

हमारा प्रयास होगा कि समर्पण द्वारा किए जा रहे 'सुखायतन' के निर्माण में होने वाले आय-व्यय में राजकीय नियमों का अधिकांशत: पालन किया जाय।

सुखायतन में बोलियाँ व अन्य औपचारिक कार्य नहीं ही होंगे या न के बराबर होंगे।

'सुखायतन' में धन प्राप्ति के उद्देश्य से धार्मिक आयोजन नहीं होंगे।

संकुल में कुछ इस प्रकार के कक्षों का निर्माण किया जायेगा जिनका स्वामित्व उसमें निवास करने वालों का हो और कुछ कक्षों का इस प्रकार से निर्माण किया जायेगा, जो साधर्मियों के सहयोग से सच में धर्म लाभ लेने, पारिवारिक जिम्मेदारियों से दूर रहकर कुछ समय शांति और एकांत में बिताने की भावना से रहनेवाले आर्थिकरूप से सक्षम और अक्षम साधर्मियों के रहने के लिए होंगे।

यहाँ रहनेवाले सभी साधर्मियों के लिए चाहे वह स्वामित्व वाले कक्ष में रहें या संस्था के कक्ष में रहें यहाँ के कार्यक्रमों में उपस्थिति देना अनिवार्य रहेगा।

यहाँ निवास करने वाले सदस्यों को कार सेवा/स्वयं सेवा के लिए प्रेरित किया जायेगा।

'सुखायतन' का पर्यावरण अंतरंग में अध्यात्म से और बहिरंग में प्राकृतिक वातावरण से संयुक्त होगा।

'सुखायतन कहाँ ?'

सुखायतन के निर्माण हेतु मेरी प्राथमिकता उदयपुर ही है, क्योंकि यहाँ पर शाश्वतधाम है और मैं और मेरा परिवार भी यहाँ पर ही रह रहा है, अत: अधिकतर समय और परिश्रम हम उसके लिए आसानी से दे सकते हैं साथ ही अन्य सुविधायें भी शहर होने से सहज ही उपलब्ध हैं।

दूसरी प्राथमिकता 'द्रोणगिरि' है जहाँ पर सिद्धायतन है। द्रोणगिरि में भूमि सहजता से उपलब्ध हो सकती है और सिद्धायतन परिसर नजदीक होने से हमें सहयोग व सुविधाएँ प्राप्त हो सकती हैं।

तीसरी प्राथमिकता जहाँ भी यातायात और चिकित्सा के पर्याप्त साधन हों ऐसे स्थान पर कोई अपनी ओर से भूमि अथवा अन्य किसी प्रकार से विशेष योगदान करते हैं तो हम वहाँ पर भी इसकी स्थापना की कल्पना कर सकते हैं ।

मेरा मानस यही है कि जहाँ पर भी 'सुखायतन' की स्थापना होगी, मेरा अपना अधिकांश समय-श्रम और जो कुछ धन व्यय कर सकेंगे वह सुखायतन के लिए ही करेंगे।

ऐसे 'सुखायतन' का निर्माण कहाँ और कब होगा इसे सर्वज्ञ भगवान के अतिरिक्त अभी कोई नहीं जानता क्योंकि यह मात्र मेरे मस्तिष्क और इन कागजों पर ही अभी अवतरित हुआ है। न कोई भूमि है ना कोई फंड ना कोई विशेष सहयोगी, फिर भी यदि आप हमारी इन भावनाओं से सहमत हैं, मेरी कार्यपद्धति से अवगत हैं और यदि आप यह मानते हैं कि यदि आप सबका सहयोग हुआ तो मैं (समर्पण ट्रस्ट के सदस्यों के साथ) इस कार्य को निष्पादन कराने में निश्चित ही सफल होऊँगा तो जो उद्देश्य-कार्य पद्धति बतलाई है, उसके अनुसार आप अपना मार्गदर्शन/सुझाव तथा आर्थिक योगदान घोषित कर सकते हैं ।

'सहयोग कैसे ?'

हमारी सदा ही कार्यपद्धति रही है कि 'समर्पण' जो भी कार्य करना चाहता है, उसे सभी के समक्ष सूचित करता है, जो सहमत होते हैं वे अपने योगदान की स्वीकृति देते हैं यदि वह कार्य संपादित होता है तो योगदान को स्वीकार करते हैं।

इसी तरह यदि आप सुखायतन की स्थापना में किसी भी प्रकार से (यदि कार्य हुआ तो सभी से तन-मन-धन-समय-बुद्धि-अपनेपन-विश्वास के सहयोग की अपेक्षा होगी ही) सहभागी बनना चाहते हैं तो आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं कृपया अपना योगदान हमें सूचित कीजियेगा। हमें सक्रिय/समर्पित

सहयोगियों की सदैव आवश्यकता रहेगी, जो समाज के लिए निरपेक्ष रहकर कुछ करना चाहते हैं उनका स्वागत है।

यदि यह कार्य संभव हुआ तो हम आप के योगदान/सहयोग को साभार स्वीकार कर सकेंगे।

'सुखायतन संस्थापन के चरण'

'सुखायतन' का निर्माण/संचालन 'समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट' के द्वारा ही होगा, जिसमें अन्य किसी भी संस्था या व्यक्ति का सीधा हस्तक्षेप नहीं होगा।

लगभग 6 माह हम साधर्मियों के सुझाव और सहयोग की स्वीकृतियों का इंतजार करेंगे/विचार- विमर्श करेंगे और यदि कार्य प्रारंभ करने योग्य स्थिति में हम पहुँचते हैं तो 1 वर्ष के अंदर सभी प्रकार की तैयारियाँ करके उस कार्य को प्रारंभ करके 2 वर्ष में उसे लगभग पूरा करेंगे। यह निर्धारित समय मर्यादा है।

(यदि हमें किसी प्रकार का उत्साहवर्धक मार्गदर्शन/सहयोग प्राप्त नहीं हुआ तो 'सुखायतन' शायद भूमि पर अवतरित नहीं होगा, पर मेरे मस्तिष्क में तो अवतरित हो ही चुका है।)

निवेदन

हम सभी पाठकों से यह निवेदन करना चाहेंगे कि 'समर्पण' व्यक्तिगत सहयोग माँगने की भावना नहीं रखता। हम इस पत्रिका/लेख के माध्यम से ही आप तक अपनी बात पहुँचा रहे हैं। यदि आपको लगता है कि यह काम होना चाहिए, ऐसे कार्य की आवश्यकता है सच में कोई ऐसा स्थान हो जहाँ हम पारिवारिक/ धार्मिक/आध्यात्मिक वातावरण में (जहाँ ऐसा नहीं लगे कि वृद्ध/अनाथ/परेशान लोग रह रहे हैं।) रहकर उत्साह और उमंग के वातावरण में अपने समय का और बुद्धि का उपयोग करें और सुखमय जीवन जीते हुए दूसरों के सुख-दुख में सहभागी बनें तो आप -

यह लेख पढ़कर जो भी विचार/सुझाव/मार्गदर्शन हों हमें अवश्य अवगत करायें। (सबसे पहले हमें आपके मानसिक समर्थन की ही आवश्यकता है।)

आप वहाँ लाभ लेने के इच्छुक हों तो सूचित करें। (लाभार्थी न हों तो स्थापना निरर्थक होगी)

अपना उदार सहयोग घोषित करें। (अर्थ सहयोग बिना कार्य संपादित नहीं हो सकता, मेरी कल्पना है कि यहाँ पर हम स्वैच्छिक/अधिक नाम-मान व निवेदन के बिना उचित व्यवस्थाओं हेतु दान करने वालों की परम्परा स्थापित कर सकें।)

आशा/विश्वास

यदि आपका सहयोग साथ प्राप्त हुआ तो शायद उनकी कल्पना जो मेरे मस्तिष्क में है उसे जमीन पर भी साकार कर सकेंगे।

कुछ नया करने का मन है तो कार्य शीघ्र होने की संभावना कम है पर कार्य असंभव है, ऐसा तो नहीं लगता।

20 सितम्बर 2018, संस्कार सुधा में प्रकाशित

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट - एक परिचय

देव-धर्म-गुरु के चरणों में, तन-मन-धन सब अर्पण।
आतमहित व तत्त्वज्ञान को, है सर्वस्व समर्पण।।

ट्रस्ट का नाम - समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट

स्थापना तिथि - 20 सितम्बर 2014

ट्रस्ट मण्डल -

संरक्षक - 1. श्री अजित जैन बड़ौदा, 2. श्री कन्हैयालाल दलावत, 3. श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, 4. श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, 5. श्री ललितकुमार किकावत लूणदा।

अध्यक्ष - राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष** - अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष** - रमेशचन्द वालावत उदयपुर, **मंत्री** - डॉ. ममता जैन उदयपुर, **सहमंत्री** - पीयूष शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी** - पण्डित अशोकुमार लुहाड़िया तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, ऋषभकुमार शास्त्री छिन्दवाड़ा, डॉ. महेश जैन भोपाल, रतनचन्द शास्त्री कोटा।

ट्रस्ट की सामान्य रूपरेखा

उद्देश्य - 1. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार करना। 2. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरूकता पैदा करना। 3. अनुपलब्ध, आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना। 4. सर्वोपयोगी पत्रिका प्रकाशित करना। 5. चिकित्सा व शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त सहयोग को वितरित करना।

कार्य पद्धति - 1. सबसे सहयोग-सबको सहयोग की भावना से साधर्मियों से प्राप्त सहयोग साहित्य/चिकित्सा/शिक्षा पर आवश्यकतानुसार वितरित करना। हमारा प्रयास होगा कि फण्ड बनाने की अपेक्षा प्रतिवर्ष प्राप्त सहयोग को उसी वर्ष वितरित कर दिया जाये। 2. व्यक्ति या संस्था के नाम के लिए नहीं, पर काम के लिए काम। 3. सर्वोपयोगी (अपनी समझ के अनुसार) योजना को सबके समक्ष रखना, यदि सहयोग प्राप्त हुआ हो तो उस योजना/कार्य को करना, नहीं तो..... ? 3. अच्छी बातें-सच्ची बातें (अर्थात् शाश्वत सत्य) ज्यादातर लोगों तक पहुँचे, ऐसा प्रयास करना।

गतिविधि - 1. साहित्य प्रकाशन, 2. **संस्कार सुधा** मासिक पत्रिका का प्रकाशन, 3. **स्नातकों द्वारा स्नातकों के लिए शिक्षा चिकित्सा सहायता योजना,** 4. साधर्मी वात्सल्य योजना - साधर्मियों से स्वैच्छिक सहयोग लेकर योग्य साधर्मियों को शिक्षा/चिकित्सा सहयोग पहुँचाना।

निवेदन - यदि आप हमारे विचारों से सहमत हों, तो आप भी आर्थिक सहयोग प्रदान कर या अपनी सहमति देकर हमारा उत्साहवर्धन कर सकते हैं।

हमारा उद्देश्य कुछ अलग ढ़ंग से समाज में जागरूकता लाना व सहयोग करना है। आपके सुझाव व सहयोग सदैव अपेक्षित हैं। आप जब, जो, जैसे कर सकते हैं, आत्महित व समाजहित में जरूर कीजिए। बस यही अनुरोध है।

निवेदक : समस्त ट्रस्ट मण्डल, समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट, उदयपुर (राजस्थान)

'सुखायतन' क्या? क्यों? कैसे?

क्या ?

'सुखायतन' वृद्धाश्रम/ब्रम्हचर्याश्रम/अनाथाश्रम नहीं है, अपितु हर आयुवर्ग के साधर्मियों के लिए सुखकर साधनाश्रम है। हर आयुवर्ग के सदस्यों को सुखमय वातावरण में रहकर जितना समय हो तत्त्वज्ञान की प्राप्ति में लगने, जो पहले से अभ्यास कर रहे हैं उन्हें और अधिक साधना कर सकें, साधर्मियों के साथ अपने चिंतन को बांटने का स्थान है 'सुखायतन'।

क्यों ?

1. मेरे परिचय में जितने संकुल हैं उनमें अर्थहीन निम्नवर्गीय अथवा मध्यमवर्गीय धर्म रुचिवन्तों के योग्य निःशुल्क व्यवस्थायें देने वाले स्थान नहीं हैं, उनको स्थान देने हेतु कल्पित है 'सुखायतन'।

2. जो अभी गहरी रुचि न होने एवं बाह्य चकाचौंध ये जो विरक्त/उदासीन नहीं हुये हैं, परन्तु धर्माभ्यास करना चाहते हैं - ऐसे युवा/प्रौढ़ वर्ग के लिए वातावरण देने की भावना से है 'सुखायतन'।

3. कारणवश अधिकांश संकुल जाने/अनजाने समारोह संस्कृति और अर्थ प्रधान व्यवस्था के पोषक बन रहे हैं। बिना उद्घाटन/अनावरण/समापन/आभार की औपचारिकताओं के कोई-सा भी कार्यक्रम सम्पन्न ही नहीं हो रहा। कृतज्ञता ज्ञापन, अतिथियों का स्वागत नहीं होना चाहिये मैं यह नहीं कहता, परन्तु जब अनावश्यक रूप से अनावृत्त चित्रों को भी धन प्राप्ति के लिए आवृत्त करके, अनावृत्त कराया जाता है और अनावरण करने वाला भी अर्ध अनावृत्त चित्र का अनावरण कर धन राशि देता है, तब दानदाता साधर्मी और दानग्रहण करने वाले महानुभावों को देखकर विचार आता है, हम इतने शिविर लगाकर, प्रवचन सुनकर भी इतना नहीं समझ/समझा सके कि बिना इस औपचारिकता के शिविर सम्पन्न करने या विद्यालय संचालित करने या मंदिर बनाने के लिए सहयोग कर सकें।

जब विद्यालय संचालित करने के शुद्ध उद्देश्य से वेदियाँ बनाई जाती हैं, प्रतिष्ठा कराई जाती हैं और प्रतिमा विराजमान करने वालों की होड़ मचती है, तब यह देखकर मन बड़ा क्षुब्ध होता है कि हम उपयोगिता के आधार पर नहीं, मानपोषण व परंपरा से चली आ रही मान्यताओं के आधार पर ही ज्ञायक और ज्ञान की महिमा गाने वाले धन व्यय करते हैं। इस प्रदर्शन की होड़ और दौड़ के बारे में कितना कहें बस इसीलिये मैं एक ऐसे संकुल की कल्पना कर रहा हूँ, जहाँ प्रदर्शन/बोलियाँ/व्यय वही हो, उतना ही हो जितना कि आवश्यक है।

हम दानदाताओं को प्रेरित करेंगे कि वह एक स्वास्तिक बनाने या रिबिन काटने की क्रिया के बिना ही 'सुखायतन' में लाभ लेने हेतु आने वाले साधर्मियों के लिये उदारता से सहयोग कीजिये। जो भावी भगवान हैं, जिन्हें सचमुच ऐसे वातावरण की आवश्यकता है क्योंकि उनके गाँव में भगवान आत्मा की बात सुनाने वाले नहीं हैं या परिवार में वातावरण नहीं है। भौतिक निर्माण की अपेक्षा चेतन के निर्माण में सहयोग कीजिये।

मेरा मानना है कि बाल/किशोर/युवा बालक-बालिकाओं के लिये अनेक संस्थान संचालित हो रहे हैं (पर्याप्त हैं - ऐसा नहीं कह रहा हूँ) पर मेरी भावना है कि कोई एक स्थान ऐसा भी हो जहाँ युवा/प्रौढ़ भी

आकर कुछ समय हर्षोल्लास के वातावरण में जिनवाणी का अभ्यास कर सकें, भले कुछ ही दिन हो। सीधा-सा अर्थ यही है कि जहाँ का वातावरण न तो भौतिक/भोगवादी हो न ही बोझिल। गंभीरता के साथ लौकिक सामान्य पर आवश्यक सुविधाओं के साथ शाश्वत/ध्रुव सुख प्राप्त करने हेतु होगा 'सुखायतन'।

यहाँ हम साधर्मियों को यह संदेश देने का प्रयास करना चाहते हैं कि वे सुविधाओं का लाभ ही न लें तन-मन-धन जिससे जितना बन सके 'सुखायतन' और साधर्मियों को दें भी, कुछ नहीं तो वात्सल्यमयी मुस्कान के साथ दूसरे के चेहरे पर मुस्कान ला सकें तो वही कीजिये।

इन सब भावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए अन्य संकुलों से अलग किसी संकुल की आवश्यकता है, इसलिये है यह 'सुखायतन'।

मेरी भावनाओं के अनुसार कितना कार्य हो सकेगा, कह नहीं सकता, कुछ अलग करने के लिये जोखिम भी लेना ही पड़ती है, मैं उसके लिए तैयार हूँ।

जो हमारी विचारधारा से सहमत होंगे, उन्हीं से तन-मन-धन का हम उनकी इच्छा से सादर स्वीकार करेंगे। इसीलिये हम व्यक्तिगतरूप से अर्थ सहयोग माँगने के लिए नहीं जायेंगे कि संकोच या परिचय के कारण किसी को सहयोग देना पड़े। यदि आपको लगता है कि इस विधि से भी कार्य होना चाहिये। यह विधि उदारता व दान की भावना के अधिक नजदीक है, यह समर्पण भावना का एक उत्कृष्ट रूप हो सकता है तो आइये हम सब एक नई पहल के साथ यह प्रयोग करें।

कैसे ?

निर्माण कैसे ?

'समर्पण' द्वारा बिना व्यक्तिगत संपर्क किये 'संस्कार सुधा' व वॉटसएप संदेशों के माध्यम से योजना की जानकारी देकर स्वैच्छिक सहयोगियों व लाभार्थियों को प्रेरित कर 'सुखायतन' की स्थापना की जायेगी। जितना सहयोग प्राप्त होगा तदनुसार ही व्यवस्था की जायेगी। सादगी व सात्त्विकता तथा 'सस्ता-सुन्दर-टिकाऊ' की अवधारणा को ध्यान में रखकर निर्माण किया जायेगा।

संचालन कैसे ?

– 'सुखायतन' धर्म और धर्मात्माओं के प्रति वात्सल्य रखने वाले समर्पित साधर्मियों के उदार सहयोग से संचालित होगा।

– 'सुखायतन' में व्यक्ति व अर्थ की मुख्यता न रखते हुये लाभार्थियों को प्रवचनों/कक्षाओं आदि की व्यवस्था होगी।

– 'सुखायतन' में रहने वाले साधर्मियों को सभी कार्यक्रमों में भाग लेना अनिवार्य होगा। इसके लिये जो भी नियमावली होगी उसका पालन अनिवार्य होगा।

– तत्त्वज्ञान के साथ-साथ प्रायोगिक पद्धति की ओर भी आकर्षित किया जायेगा, जिसके लिये व्यक्तिगत स्वाध्याय व चिंतन हेतु विशेष वातावरण बनाने का प्रयास किया जायेगा।

– 'सुखायतन' अपनी समीपस्थ संस्था का किसी भी रूप में प्रतियोगी नहीं पूरक ही रहेगा।

– समारोह संस्कृति को बढ़ावा न देकर मात्र आत्मसाधना के योग्य कार्यक्रम संचालित किये जायेंगे।

– 'सुखायतन' में निवास करने वाले सदस्य आत्महित के अतिरिक्त सामाजिक दायित्वों के प्रति सजग हों इसके लिये प्रतिदिन मंदिर/स्वाध्याय भवन/भोजनालय/पुस्तकालय/वाचनालय/अतिथि सत्कार आदि व्यवस्थाओं में जिसमें जिसकी रुचि या योग्यता हो तदनुसार सहयोग करना अनिवार्य होगा।

'सुखायतन' में अपेक्षित निर्माण जो उदारमना साधर्मियों के सहयोग से निर्मित होंगे –

1. 50 आदरणीय साधर्मियों के रहने योग्य 20 कक्ष वाला 'वात्सल्यधाम'। 'वात्सल्य धाम' में –

अ. साधर्मी सशुल्क आवास–भोजन, सशुल्क आवास–नि:शुल्क भोजन, नि:शुल्क आवास–भोजन इन तीन प्रकार से स्वयं अपनी इच्छा से लाभ लेकर धर्म साधना कर सकेंगे। इस व्यवस्था में किसी एक को स्वतंत्र आवास व्यवस्था नहीं दी जायेगी।

ब. साधर्मियों की आवास व्यवस्था का दूसरा प्रकार – जो स्वयं कक्ष निर्माण व व्यवस्था हेतु पूर्ण शुल्क प्रदान करेंगे वह शुल्क किसी भी कारण से लाभार्थी कक्ष खाली करते हैं या ट्रस्ट खाली कराता है तो संस्था द्वारा वापिस कर दी जायेगी। कक्ष पर उपयोग करने हेतु स्वामित्व रहेगा पर विक्रय नहीं किया जा सकेगा। यह कक्ष जितने सहयोगी मिलेंगे, तदनुसार 2 सदस्यों की आवास व्यवस्था योग्य आवश्यक सुविधा युक्त निर्मित कराये जायेंगे।

स. साधर्मियों के आवास के लिये तीसरा प्रकार वह होगा, जिसमें साधर्मी अपने स्वामित्वपूर्वक धर्म लाभ लेने की भावना सहित निर्माण करायेंगे। इन भवनों को ट्रस्ट की अनुमति/सहमति से विक्रय भी किया जा सकेगा।

(सभी व्यवस्थाओं के लिये विशेष नियमावली निर्माण के पूर्व ही तैयार करा ली जायेगी, जिसमें सभी की सहमति होगी। यह तो सामान्य सूचना मात्र है।)

2. 50 सदस्यों के योग्य भोजनालय, 3. कार्यालय, 4. स्वाध्याय/कक्षा/चिंतन भवन, 5. पुस्तकालय/वाचनालय।

मुस्कराते रहो और अन्य के मुस्कराने में कारण बनो।

मित्रों की सलाह व शंकाओं के संबंध में

जब से हमने 'सुखायतन' की योजना प्रस्तुत की है, तब से वॉट्सएप पर अनेक मित्रों ने स्नेहवश अनेक प्रकार की चर्चायें की हैं। समर्पण की सोच रही है कि 'स्पष्ट कहना–सुखी रहना' अतः उन संदेशों के संबंध में हम अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं –

1. कुछ हितैषी/मित्र कहते हैं कि व्यर्थ ही इन निर्माण व वाट्सएप पर लेखन आदि कार्यों में क्यों उलझे रहते हो, बेकार में ही समय खराब करते हो, समय निकालकर आत्महित के लिए शांति से स्वाध्याय आदि कार्य क्यों नहीं करते ?

मैं उन मित्रों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जो मेरे प्रति स्नेह रखते हुये मुझे आत्महित की प्रेरणा दे रहे हैं, आत्महित हेतु तत्त्वाभ्यास से उत्तम कार्य अन्य नहीं है, यह मैं भलीभाँति जानता हूँ। मैं अपने उन मित्रों का विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि मैं लगभग प्रतिदिन जिनेन्द्राभिषेक–पूजन, दोनों समय स्वाध्याय, कम से कम 1 कक्षा, विद्यालय में हिन्दी आदि विषयों के अतिरिक्त 4 कालांश जैनदर्शन का अध्यापन, कुछ समय निजी स्वाध्याय, बस में आते–जाते या विद्यालय में समय मिलने पर कुछ वाट्सएप संदेश व संस्था संचालन हेतु प्रयास करता हूँ यह मेरी दिनचर्या है। हाँ यह अवश्य है कि इस दिनचर्या के कारण मैं परिवार को समय नहीं दे पाता जिससे कभी–कभी खेद होता है परन्तु अच्छे कार्य में लगे होने के कारण परिवार का समर्थन मिलने से मैं इस दिनचर्या को निरन्तरता दे पाता हूँ।

व्यक्तिगत स्वाध्याय और अधिक करना चाहिये वह मैं नहीं कर पाता हूँ, चिंतन में गहराई होना चाहिये यह मैं जानता हूँ, परन्तु जबतक कार्य की प्रतिबद्धता नहीं होती, तब तक मैं कोई कार्य नहीं कर पाता, बस इसीलिये 'सुखायतन' की कल्पना की है, जहाँ छात्रों को छोड़कर वरिष्ठजन के साथ कुछ गहराई से स्वाध्याय किया जा सके, भावों में निर्मलता लाई जा सके।

यह सब कार्य मेरी दिनचर्या को खंडित किये बिना ही करने का प्रयास करूँगा। पूवोक्त दिनचर्या से अधिक मेरे द्वारा अभी संभव नहीं है, यदि मैं आपकी बात मानकर यह कार्य करना छोड़ दूँ तो शायद मैं अपनी कमजोरी से जो आप चाहते हैं वह न करके प्रमाद का ही पोषण करूँगा, अतः यह कार्य श्रमसाध्य होते हुये भी करना चाहता हूँ।

2. कुछ मित्रों के संदेश आये हैं कि यह सब हम नाम या मान पोषण के लिए करना चाह रहे हैं।

मित्रो ! मैंने अनेक विद्वानों से सुना है कि 'अच्छे कार्य करने का निषेध नहीं है। जो कार्य अपनी योग्यता से हो रहा है, उसमें निमित्त बनने का अवसर मिलता है तो इसे सौभाग्य मानकर उस कार्य में अवश्य लगना चाहिये, पर मैंने किया है ऐसा अहंकार नहीं करना।' मैं इस बात को भलीभांति मस्तिष्क में लेकर चल रहा हूँ। अतः नाम व मान की इच्छा से यह कार्य करने की हमारी किसी की भी भावना नहीं है।

3. कुछ मित्रों ने यह भी संदेश दिये हैं कि जो संस्थान पूर्व में संचालित किये हैं, उनको तो अच्छी तरह सम्हालो फिर अन्य का विचार करना, सुखायतन में सुख नहीं सुख तो आत्मा में है।

मित्रो ! इस संबंध में भी कहना चाहूँगा कि यह 'सुखायतन' अपने लिये कोई नया स्थान खोजने या कहीं से हटने के कारण नहीं है। मैं 'ध्रुवधाम' से अभी भी पूरी तरह जुड़ा हुआ हूँ व 'ध्रुवधाम' ज्ञायक

परिवार की भावनाओं/परिश्रम तथा भाई डॉ. प्रवीणजी शास्त्री के मार्गदर्शन में बहुत अच्छी तरह से चल रहा है।

शाश्वतधाम में तो अभी रह ही रहा हूँ जहाँ इस सत्र में 100 बालिकायें हो जायेंगी। ट्रस्ट मण्डल के प्रयासों से अभी तक की सर्वश्रेष्ठ भौतिक सुविधाओं के साथ सीमित साधन होते हुये भी उत्तम परीक्षा परिणाम देते हुये शाश्वतधाम निरन्तर अग्रसर है।

राजकीय विद्यालय में कार्यरत होने के कारण स्थानान्तरण होने से बांसवाड़ा/उदयपुर जाना हुआ और कार्य होने की योग्यता से मुझे सौभाग्य से इन कार्यों में योगदान करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका हमने लाभ लिया। यदि आगे भी इसप्रकार का अवसर और भी मिलेगा तो उत्साहपूर्वक वह कार्य भी करूँगा ही अतः इस प्रकार के दुर्विकल्प घर पर बैठे वाट्सएप चलाते हुये कृपया न करें कि पहले जो संस्थान चल रहे हैं उन्हें ही सम्हाल लें आदि।

यहाँ यह भी बताना चाहूँगा कि ध्रुवधाम बालकों के लिए, शाश्वतधाम बालिकाओं के लिए तो 'सुखायतन' प्रौढ़ वर्ग के लिये है, इनमें किसी प्रकार की प्रतियोगिता नहीं है।

4. कुछ मित्रों ने यह भी सन्देश दिये हैं कि हम समाज से पैसा लेकर मनमर्जी से व्यय करना चाहते हैं।

मित्रो! इस संबंध में हम इतना ही कहना चाहते हैं कि हम व्यक्तिगत परिचय का लाभ लेते हुये किसी से भी अर्थ सहयोग की अपेक्षा नहीं रख रहे हैं, जो हमारे मन में योजना व कार्यपद्धति है वह 'अत्यन्त' स्पष्ट करके सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं, जिन्हें यह कार्य व पद्धति समझ में आयेगी वे स्वेच्छा से हमें सहयोग देंगे व लाभ लेंगे अत: यह कहना कतई उचित नहीं है कि हम समाज का पैसा मनमर्जी से व्यय कर रहे हैं। यदि कार्य सम्पन्न होता है तो जो सहयोग नहीं करेंगे उनके लिये भी 'सुखायतन' सदैव खुला रहेगा।

अन्त में मैं तो आप सभी से निवेदन कर रहा हूँ कि परिवार, व्यापार, वाट्सएप, फैसबुक, रिश्तेदारियाँ निभाने के विकल्प कम करके आप भी आत्महित की भावना से यदि हमारे साथ आते हैं, तब तो हार्दिक स्वागत है ही और यदि साथ में किसी कारण से नहीं आ पा रहे हैं तो स्वयं कहीं कुछ अच्छा कीजिये, अच्छे कार्य की अनुमोदना कीजिये और हमारे कार्य में कहीं पर भी आगमविरुद्ध कुछ कार्य हो जाये तो हमें टोकने/रोकने के अधिकार का उपयोग कीजिये।

कार्य तो होना होगा तो होगा ही और यदि सर्वज्ञ के ज्ञान में नहीं आया है तो नहीं भी होगा, बस आपकी सूचना को बता दें कि मैं तो 'सुखायतन' में ही हूँ।

'समर्पण' आदरणीय ब्र. रवीन्द्रजी 'आत्मन्', ब्र. कल्पनाबहिनजी के प्रवचनों व अन्य संदेशों से प्रभावित होकर प्रस्तावित 'सुखायतन' व अन्य कार्यक्रमों में निम्नलिखित बातों का स्वयं ध्यान रखकर प्रचारित भी करना चाहता है –

1. जो प्रतिदिन पूजन का नियम लिये हुये हों या नियम ले उसकी मुख्यता रखकर योग्य धनदान करने वाले को ही (सुखायतन में यदि मंदिर का निर्माण हुआ तो, अभी प्रस्तावित नहीं है) भगवान विराजमान करने का अवसर दिया जाये।

2. जो जिस जिनवाणी का स्वाध्याय कर चुका हो या करने का नियम लेकर आवश्यक सहयोग राशि स्वेच्छा से प्रदान करे उसी को किसी भी प्रसंग पर जिनवाणी विराजमान करने का अवसर प्रदान किया जाये।

3. जो पूजन करने/स्वाध्याय करने/रात्रिभोजन त्याग/जमीकंद त्याग आदि नियम लिये हुये हों या कोई नियम ले ऐसे परिवार द्वारा ही उद्घाटन/शिलान्यास/कलश स्थापन आदि कार्य करने हेतु अवसर प्रदान किया जाये।

4. स्वाध्याय प्रेमी अनावश्यक उद्घाटन/विमोचन/अनावरण किये बिना ही निर्माण/शिविर संचालन/साहित्य प्रकाशन में उदारता पूर्वक सहयोग कर लाभान्वित हों – ऐसी भावनाओं का प्रचार–प्रसार किया जाये।

5. पहली बोली जितने में जाती है, उसी प्रकार की दूसरी बोली उसके आसपास भी नहीं जाती। जबकि साधर्मियों के भाव ऐसे बने कि दूसरी बोली वहीं से प्रारंभ हो जो पिछली शेष रह गई थी। इससे समय भी कम लगेगा और जिसने भाव बना लिये थे, उसे दान न करने का दोष भी नहीं लगेगा।

6. यदि कदाचित् लेने वाले बोली न भी ले सकें तो हमें वह राशि किसी न किसी रूप में दान कर ही देना चाहिये क्योंकि वह राशि निर्माल्य के रूप में हो चुकी है क्योंकि दान करने की भावना से बोली लगाई तो थी ही।

7. धनार्जन करने के लिये विधान या अन्य कार्यक्रम आयोजित नहीं करेंगे, मात्र धर्म प्रभावना ही लक्ष्य होना चाहिये।

8. कार्यक्रमों के समय पांडाल/भोजन आदि में भी हम मात्र सुन्दरता के लिए नहीं अपितु सादगी व सुविधा की दृष्टि से ही व्यय करेंगे। दान की राशि का अपव्यय न हो इसका ध्यान रखेंगे।

9. अनावश्यक फण्ड बनाने की प्रवृत्ति में हम नहीं फंसेंगे क्योंकि मात्र धन होगा तो ही संस्था चलेगी – ऐसा नहीं है। यदि सभी की भावनायें हैं तो हम कम खर्च व कम फण्ड से भी काम कर सकेंगे।

10. हमारा मानना है कि यदि योजना सही होगी तो साधर्मी निश्चित ही सहयोग करेंगे और यदि सहयोगी तैयार नहीं हैं तो हमें वह योजना संचालित करने का आग्रह भी नहीं है। हम मात्र उतनी ही व्यवस्था करना चाहेंगे जिससे कि जो लाभार्थी अर्थ सहयोग करने में सक्षम नहीं हैं (जिनकी की संख्या न्यूनतम है) उनके योग्य अन्य साधर्मियों से या फण्ड से व्यवस्था कर ली जाये।

निष्कर्षत: हम मात्र धन की मुख्यता से कार्य न करें इस तरह से प्रेरित करने का प्रयास करें जिससे कि साधर्मी धर्ममार्ग में अग्रसर हो सकें।

हमारी यह भावनायें हैं जिससे कि समाज की मानसिकता में कुछ परिवर्तन हो। यह कोई अपरिवर्तनीय सिद्धान्त/नियम तो नहीं हैं परन्तु सात्त्विक नीतियाँ अवश्य हैं। इनमें कुछ सुधार सामाजिक स्तर पर मिलकर तो कुछ व्यक्तिगत स्तर पर किये जा सकते हैं। शत–प्रतिशत ऐसा ही हो जायेगा ऐसा तो नहीं है, पर हम जो भी कर सकते हों वह अवश्य करें। हमारी अहिंसक सात्त्विक संस्कृति सुरक्षित रहेगी तो हम सुरक्षित रहेंगे।

''हम सहयोग सार्वजनिकरूप से व मार्गदर्शन जिनसे लेना होगा उनसे व्यक्तिगतरूप से सविनय लेंगे।'' अत: आपको यदि हमारी विचारधारा पसन्द आती है, आप कुछ अलग हटकर स्व–परहिताय करने के इच्छुक हैं तो स्वेच्छा से अपना उदार सहयोग तन–मन–धन–समय सूचित करके हमारा उत्साहवर्धन कीजियेगा।

20 फरवरी 2019

तब तो बन गया सुखायतन

'समर्पण' द्वारा बोलियों के संबंध में अपनी नीति या जिस तरह बिना व्यक्तिगत संपर्क किये स्वेच्छा से सहयोग करने की बात कही गई है, सादगी और सात्त्विकता से समारोह संस्कृति को बढ़ावा न देने की बात कही गई है, उसको पढ़कर हमारे मित्रों का कहना है कि –

जब तक किसी की प्रशंसा न करें, निवेदन न करें तब तक कोई 11 हजार रुपये भी नहीं लिखाता है। तब फिर आपको कौन सहयोग करेगा? ऐसे में तो बन चुका 'सुखायतन'!

भव्य समारोह नहीं करोगे, उद्घाटन/अनावरण नहीं करोगे तब तो बन गया 'सुखायतन'।

मित्रो! 'सुखायतन' बन ही जाये यह हमारी जिद नहीं है। हमने दो दिन पूर्व लिखा है कि संकुल बहुत हैं, जहाँ लाभ लेने वाले लाभ ले रहे हैं, हम भी आवश्यकता होने पर वहीं चले जायेंगे। चले क्या जायेंगे हम तो ऐसे ही वातावरण में 1982 से ही रह रहे हैं, मात्र स्थान बदले हैं वातावरण नहीं। हमारा उद्देश्य तो अन्य साधर्मियों के निमित्त 'सुखायतन' के माध्यम से स्थान बनाने और सहयोगियों की भावनाओं को भी नया रूप देना है।

बिना मानपुष्टि के दान नहीं लिया जा सकता, स्वेच्छा से बिना नाम या कम नाम के दान नहीं दिया जा सकता, इस मानसिकता को बदलना है। (सहयोगियों का हृदय से सम्मान/बहुमान तो रहेगा ही/होना ही चाहिये)।

'सुखायतन' में समारोह होंगे ही नहीं, उद्घाटन/अनावरण होंगे ही नहीं – ऐसा नहीं है पर कुछ नवीनता होगी, सादगी में भी सुन्दरता होगी। वात्सल्यपूर्वक प्रभावना होगी, अध्यात्म के स्वादिष्ट व्यंजन होंगे तो चरणानुयोग व भक्ति का रस भी होगा। ये कुछ कल्पना हमारे मन में हैं।

इस अवसर पर मैं एक विचार प्रस्तुत करना चाहता हूँ, अन्य मतावलम्बियों में उनके मत के समर्थकों को बिना जाति-पांति के भेदभाव के सेवाभाव से हजारों लोगों के भोजन आवास की सावधि/निरवधि व्यवस्था की जाती है, जिनको देखकर उन सहयोगियों को प्रणाम करने का मन होता है, परन्तु वहाँ अर्थ सहयोगियों के नाम भी पता नहीं चलते तो क्या हम 25-50 साधर्मियों की जिन्हें हम भावी सिद्ध कहते हैं कि व्यवस्था नहीं कर सकते?

हमें सोच बदलना है। हमें कुछ नया करना है। कितना व क्या करना है यह मैं पूरा कह नहीं सकता पर आपका सहयोग मिला तो धीरे-धीरे ही सही हम कुछ तो कर ही सकेंगे।

बस इतना विश्वास दिलाते हैं कि आपके द्वारा किये गये अर्थ सहयोग का –

1. मैं/हम अपने व्यक्तिगत जीवन पर उपयोग नहीं करेंगे।

2. प्रत्येक रुपये का सदुपयोग हो इसका ध्यान रखेंगे।

3. समय-समय पर नियमानुसार/आवश्यकतानुसार सहयोगियों को यथासंभव वाट्सएप या मीटिंग में हिसाब प्रस्तुत किया जायेगा।

4. यह 'सुखायतन' सबके द्वारा सबके लिये व सबका होगा मात्र 'व्यवस्थापक' के रूप में 'समर्पण' परिवार के सदस्य अग्रणी रहेंगे।

यदि विश्वास है तो आओ एक कदम आगे चलें और हम कह सकें कि ऐसे भी बन सकता है 'सुखायतन'।

6 फरवरी 2019

मंगलकारी घोषणा

1. आज बहुत ही पवित्र दिवस है आचार्य कुन्दकुन्ददेव का जन्मदिवस। जिन आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने समयसारजी, नियमसारजी जैसे ग्रन्थों की रचना करके शुद्धात्मा का स्वरूप प्रतिपादन किया, वहीं अष्टपाहुड़ जैसे ग्रन्थ में रत्नत्रय धर्म तथा दिगम्बर मुनिधर्म के शुद्धस्वरूप का विवेचन करके शाश्वत दिगम्बर जिनधर्म को ग्रन्थों के माध्यम से सुरक्षित किया है मानो वह जैन संविधान ही लिखकर दे गये हैं। उनके चरणों में सादर नमोस्तु।

2. आज दशलक्षण पर्व का भी दूसरा (तिथि के अनुसार तो पहला ही है, परन्तु आगे तिथि क्षय हो जाने से चतुर्थी से पर्व प्रारंभ हो गये) दिवस उत्तम मार्दव धर्म का है, जो हमारे हृदय में कोमलता लाकर आत्महित करने के मार्ग पर अग्रसर होने का संदेश दे रहा है।

3. लौकिक दृष्टि से देखें तो आज बसंत पंचमी का दिन है। बसंत पंचमी लोक में उत्साह-उमंग के पर्यावरण का त्योहार है, यह बसंत ऋतुराज कहलाता है। प्रत्येक के उत्साह और उमंग भरने वाला होता है।

ऐसे उत्साह और उमंग के मांगलिक दिवस पर मैं आप सबके विचारों से अवगत होकर एवं अपने साथियों से विचार-विमर्श करके भावनाओं को स्थायित्व देते हुये यह सूचित कर रहा हूँ कि -

'सुखायतन' की परिकल्पना आप सबके सहयोग से हम सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि की तलहटी एवं तीर्थधाम सिद्धायतन की छत्रछाया में ही साकार करेंगे।

1. परमपूज्य आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव के जन्मदिवस के प्रसंग पर मैं 'समर्पण' की ओर से वचनबद्ध हो रहा हूँ कि 'सुखायतन' में आचार्य कुन्दकुन्ददेव का अध्यात्म और चरणानुयोग दोनों को प्रचारित-प्रसारित करने में ही नहीं, अपितु अपने जीवन में उतारने के योग्य स्थान निर्माण करने का प्रयास किया जायेगा।

2. दशलक्षण पर्व में आज उत्तम मार्दव धर्म का दिवस भी है। मैं अपनी ओर से निवेदन करना चाहूँगा कि यह सुखायतन किसी की भी लकीर छोटी करने, अपनी बड़ी करने या अपने नाम व मान के लिये नहीं है। तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में जितनी जो भी संस्थायें लगी हैं, तदनुसार ही हम एक छोटासा प्रयास कर रहे हैं।

3. आज बसन्त उत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है। यह पर्व हर्ष और उल्लास का पर्व कहा जाता है। मैं इस अवसर पर निश्चित ही बहुत प्रमुदित हूँ, उत्साहित हूँ और सोचता हूँ कि यह 'सुखायतन' का कार्य कुछ अलग ढ़ंग से हो, जो आकर्षक भी हो हम ऐसे स्थान की कल्पना कर रहे हैं।

आप सबके आगमसम्मत, सादगी और सात्त्विकता भरे जो भी सुझाव प्राप्त होंगे, हम उनको निश्चित ही स्वीकार करने का प्रयास करेंगे।

आपसे अपेक्षा है यदि आप हमारी भावनाओं/नियमों/कार्य करने की पद्धति से सहमत हैं, तो उदारतापूर्ण सहयोग कीजियेगा। भले ही वह भावना 4 के हृदय में हो चाहे 40 के हृदय में हो वे सभी 'समर्पण' परिवार

के सदस्य हैं।

जिन कारणों से सुखायतन की कल्पना की है, समर्पण द्वारा संस्कार–सुधा, वॉटसएप से जिन विचारों को प्रचारित किया जाता है, उनको भी मैं इस अवसर पर पुनः प्रस्तुत करना चाहता हूँ –

आज समारोह संस्कृति बढ़ती जा रही है। 1 दिन का भी शिविर अभूतपूर्व–ऐतिहासिक विशेषणों से विभूषित किया जा रहा है, जो हमारे मान पोषण करने का ही कार्य करता है। आदरणीय बाबू युगलजी कहा करते थे कि–

'किसी भी कार्यक्रम को अभूतपूर्व क्यों कह रहे हो? क्या इसके पूर्व जिनधर्म की प्रभावना का कार्य किसी अन्य के द्वारा नहीं हुआ होगा?

'न भूतो न भविष्यति' कहकर क्या हम यह कहना चाह रहे हैं कि भविष्य में धर्म प्रभावना के काम नहीं होंगे या नहीं होना चाहिये।

हम अपनी तरफ से अच्छे से अच्छे कार्यक्रम आयोजित करें परन्तु जिनसे गर्व झलकता हो इस प्रकार के कार्य न करें।

क्यों हम 1–2 दिन के कार्यक्रमों में भी उद्घाटन/आभार/समापन/विमोचन/अनावरण में ही अधिक समय व्यतीत कर कुछ लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ाकर सम्पन्न कर रहे हैं? क्यों हम 1 दिन के सामान्य विधान भी बिना स्वर्गवासी हुये अर्थात् इन्द्र आदि बने एक श्रावक की भूमिका में नहीं कर पाते?

क्यों छोटे–छोटे समारोहों में भी इन्द्रों के माध्यम से ही सभायें लगाकर तत्त्वचर्चायें सुनाई/कराई जाती हैं? क्या श्रावक तत्त्वचर्चा नहीं करते? क्या हर कार्यक्रम देव ही करते हैं, मनुष्य नहीं? क्या यह सब आगमसम्मत है या मात्र फोटो खिंचाने उस माध्यम से पैसा ऐंठने के तरीके हैं?

यह सब पद्धतियाँ समाज में निरन्तर बढ़ रही हैं, मैं इनसे व्यक्तिगत रूप से न तो सहमत हूँ न ही पोषक। परन्तु मिथ्यात्वपोषक व हिंसक न होने से इस रूप में विरोधी नहीं हूँ कि इन कारणों से उन कार्यक्रमों में न जाऊँ या उन कार्यक्रमों के सफल होने की कामना न करूँ या उत्साहपूर्वक सहयोग न करूँ। (यह सब कार्य मैं अन्य संस्थानों के माध्यम से करता दिखता भी होऊँगा, जिससे शयद मेरे द्वारा लिखित बात समझने में विसंगति लगती हो पर अब शायद भावना समझ सकेंगे।)

परन्तु मैं यह चाहता जरूर हूँ कि समर्पण द्वारा एक ऐसा स्थान तैयार हो, जहाँ ऐसे कार्य करने में सावधानी रखी जाये और इन नीतियों को प्रचारित भी किया जाये, जिसमें आप सभी का हृदय की कोमलता–सरलतापूर्वक सहयोग भी अपेक्षित है। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि आत्मकल्याण तो पर की अपेक्षा के बिना ही होगा, परन्तु तत्त्व प्रचार–प्रसार सभी के सहयोग से ही संभव है। यहाँ इतना निवेदन अवश्य करेंगे कि सहयोग लेने की अपेक्षा से यदि हमें अपनी भावनाओं से समझौता करना पड़ा तो वह हम नहीं करेंगे, भले ही कार्य रोकना पड़ जाये।

हम बहती हुई धारा के साथ कार्य करने के इच्छुक नहीं हैं परन्तु आप सबके सहयोग/सहमति से आगमसम्मत/सात्त्विक पद्धति को अवश्य ही प्रचारित करना चाहते हैं।

हम दशलक्षण पर्व के पावन अवसर तथा आचार्य कुन्दकुन्ददेव के जन्मदिवस पर अपने मन से यह संकल्प करें कि जो भी सहयोगी बनेंगे वह पारस्परिक विश्वास व वात्सल्य बनाकर रखेंगे। जो भी इसमें चाहे वह निजी भवन बनवाना चाहते हों पर वह धर्मलाभ लेने और 'सुखायतन' की नियमावली के पालन करने की भावना से ही सहयोग करने के लिए अग्रसर हों।

अभी तक जिन्होंने भी अपने कक्ष/भवन बनवाने के लिये सूचित किया है, यह उनकी बुकिंग नहीं है, हम उसे प्राथमिक सूचना मात्र मानकर सुरक्षित रखेंगे तथा उन्हें प्राथमिकता भी देंगे परन्तु भूमि क्रय करने के बाद व्यवस्थित योजना बनने पर हम पुनः पत्रिका व वाट्सएप द्वारा सूचना देंगे तब जिनकी स्वीकृति प्राप्त होगी उनके ही आवास आरक्षित किये जायेंगे। तब तक आपको भी सोचने का पूरा अधिकार है।

यह इसलिये भी आवश्यक है कि भूमि कितनी मिलती है? सार्वजनिक उपयोग के लिये हम कितनी भूमि रोक पाते हैं ? उसके बाद निजी निवासों के लिये कितनी भूमि रहती हैं? लागत राशि क्या आती है? यह सब तय होने के बाद ही कुछ निर्णय किया जा सकेगा।

हमारे सभी कार्य आप सभी के सहयोग से ही सम्पन्न होंगे। 'समर्पण' की इस भावना को आप सभी समझें- हम अलग से दानदाता खोजकर अन्य किसी के लाभ हेतु व्यवस्था करने की अपेक्षा 'लाभार्थी ही हमारे सहयोगी बनें' को ध्यान में रखकर अधिकांश कार्य करना चाहते हैं।

इस अवसर हम इतना ही कहना चाहते हैं कि हम शीघ्र ही भूमि क्रय करने या उसके लिये सहयोग की अपेक्षा से सूचना शीघ्र ही प्रसारित करेंगे, तब तक के लिये इस 'सुखायतन' समूह में अब चर्चा को विराम दिया जा रहा है।

- निवेदक समर्पण

माघ शुक्ला पंचमी आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव जन्म-दिवस,
बसंत पंचमी वी.नि.सं 2545, वि. सं 2075 तदनुसार 10 फरवरी 2019, रविवार

रहेगा सबका साथ, सुखायतन का विकास।
है सबका साथ, कमजोर न मेरा हाथ।।

सहयोग

1. सुखायतन सहयोगी के रूप में आप निम्नलिखित मद में स्वीकृति प्रदान कर सकते हैं –

क. परम संरक्षक	–	250000/–
ख. संरक्षक	–	100000/–
ग. परम सहायक	–	50000/–
घ. सहायक	–	25000/–

अन्य राशि भी कोई देना चाहें सबका स्वागत है।

2. यदि कोई भूमि क्रय हेतु 2 वर्ष के लिए उधारी के रूप में देना चाहें तो भी दे सकते हैं।

3. जो साधर्मी सुखायतन में स्वामित्व वाले कक्ष भवन चाहते हैं, वे जो भी राशि अभी देंगे वह यदि चाहेंगे तो वह राशि निर्माण के समय आपसे अपेक्षित राशि में सम्मिलित कर ली जायेगी।

– अभी आप मात्र सहयोग राशि घोषित ही करें, जमा करने हेतु हम बाद में सूचित करेंगे।

– घोषणा आप सुखायतन समूह में या मेरे व्यक्तिगत नंबर पर कर सकते हैं।

– सभी योजना सुनिश्चित होने के बाद निर्माण हेतु आप सभी को सूचित किया जायेगा।

– संपर्क – 9414103492/9414499549/9785643202

'सुखायतन' की पूर्णता हेतु हमारी कार्ययोजना

1. सुखायतन समूह में 15 दिन के अन्दर कहाँ बनना चाहिये यह तय करेंगे।
2. भूमि क्रय करने हेतु अर्थ सहयोग हेतु वाट्सएप पर ही सूचना प्रसारित कर 15 दिन में सहयोगी प्राप्त करने का प्रयास।
3. भूमि क्रय करने के 2 माह के अन्दर उस जगह के अनुरूप सारी योजना की प्रस्तुति।
4. 2–3 माह में तदनुकूल सहयोगी प्राप्त होने पर निर्माण कार्य प्रारंभ करने की तैयारी।
5. यदि अनुकूल सहयोग मिलता है तो 2 वर्ष के अन्दर उपयोग प्रारंभ।

इस तरह लगभग 30 माह में सुखायतन का साकाररूप हमारे समक्ष हो सकता है।

हो सकता है असंभव नहीं है यह मानकर सक्रिय हूँ और होना होगा तो ही होगा और सभी समवाय समय पर मिलेंगे यदि नहीं होना होगा तो नहीं ही होगा यह अकाट्य सत्य है, इसका विश्वास है अतः निश्चिंत हूँ।

22 मार्च 2019

आप अपनी सहयोग राशि 'समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट' के नाम से, पंजाब नेशनल बैंक, पंचशील मार्ग, उदयपुर के खाता क्रमांक 0458000100404840 में जमा करा सकते हैं।

IFSC Code - PUNB 0045800.